अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका

Volume 8, Issue2, (April-June 2020)
Impact Factor: 5.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

रामायण में आयुर्वेद साहित्य

डा0 इतेन्द्र धर दूबे

बी0एड्0 विभाग, असिस्टेण्ट प्रोफेसर,

चन्द्रकान्ति रमावती देवी आर्य महिला पी.जी. कालेज गोरखपुर

संस्कृत का आदिकाव्य रामायण को कहा जाता है। इससे पूर्व वंशानुचरित अर्थात् जिसका प्राचीन नाम नाराशंसी है और पिछला नाम इतिहास है। वंशानुचरित का इतिहास नहीं मिलता। रामायण में राजाओं को क्रमगत बताया गया है। रामायण पिछले काव्यों, नाटकों का आदि स्रोत है। कालिदास, अश्वघोष ने इसी से प्ररेणा ली है। इसकी उपमाएँ, इसके वचन, उनकी रचनाओं में मिलते हैं। रामायण काव्य ऐतिहासिक रचना है। इस रचना में प्रसंगवश चिकित्सा सम्बन्धी कुछ वचन मिलते हैं। ये वचन मुख्यतः शल्य चिकित्सा से सम्बन्ध रखते हैं यथा –

मेषवृषण

इन्द्र के नामों में एक नाम मेषवृषण भी है। गौतम ऋषि के शाप से इन्द्र केवृषण निकम्मे हो गये थे, इसलिए उसके लिए अविश्वनी ने मेष के वृषणों को लगाया था। इसी से उसका मेषवृषण हुआ।

मूढ़गर्भ में शल्यकर्म

सुश्रुत ने फँसे अंग को काटकर निकालने की सूचना दी है। सीता ने भी अपने दुःख का वर्णन करते हुए हनुमान को इसी रुप में सन्देश दिया है–यदि राम जल्दी नहीं आयेंगे तो अनार्य रावण (राक्षस) मेरे अंगों को अवश्य तेज शस्त्रों से बहुत जल्दी काट देगा, जिस प्रकार कि शल्य चिकित्सक गर्भस्थ शिशु के अंगों को काटकर बाहर करते हैं। मुझ दुःखी के लिए इससे अधिक क्या दुःख है? जिस प्रकार बलि के बाँधे गये पशु को तथा वध्य चोर को रात्रि के अन्तिम भाग में दुःख होता है, उसी प्रकार का कष्ट मुझे है। तैल द्रोणी–भारतीय प्रथा में वस्तुओं को सुरक्षित रखने का उपाय तेल और मधु हैं घरों में आचार, लकड़ी आदि तैल से ही सुरक्षित रखे जाते हैं। राजा दशरथ के शव को भी भरत के आने तक तेल में ही सुरक्षित रखा गया था।

Volume 8, Issue2, (April-June 2020)
Impact Factor: 5.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

वृक्ष वनस्पति

रामायण में वर्णित वृक्ष वनस्पति प्रायः स्पष्ट हैं–कुटज, अर्जुन, कदम्ब, सर्ज, नीम, सप्तच्छद, अशोक, असन, सप्तवर्ण, कोविदार, बन्धुजीव आदि प्रचलित नाम रामायण में मिलते हैं। वेदों की भाँति अप्रचलित वनस्पतियों या वृक्षों का उल्लेख रामायण में नहीं है। इस दृष्टि से रामायण में वनों का वर्णन महत्त्वपूर्ण है। महाभारत में वनों का वर्णन वनस्पति या वृक्षों की दृष्टि से महत्त्व नहीं है।

आसव तथा पानभूमि

रामायण में रावण की पानभूमि का उल्लेख है। इसमें दिये गये आसवों के नाम, पानभूमि का वर्णन, मद्य और मांस का सम्बन्ध पूर्णतः आयुर्वेद ग्रन्थों की भाँति है–रावण की पानभूमि अग्नि के बिना भी जलती हुई दिखती है। इसका अनेक प्रकार से संस्कार किया गया था। नाना तरह के ठीक प्रकार से बनाये गये अनेक मांस वहाँ थे। अनेक प्रकार की निर्मल प्रसन्न–सुरा, शर्करासव, माध्वीक, पुष्पासव, फलासव वहॉ पर थे। नाना प्रकार के सुगन्धित चूर्ण रखे हुए थे। बहुत–सी मालाएँ वहाँ थीं। सोने और स्फटिक के पात्र वहाँ पर थे। जाम्बूनद के पात्र ओले बर्फ के अन्दर रखे थे। चाँदी, मिट्टी तथा स्वर्ण के पात्रों में सुरा रखी थी। कहीं पर आधे खाली पात्र पड़े हुए थे, कहीं पर बिलकुल खाली पात्र थे, और कहीं पर बिना पिये भरे पात्र पड़े हुए थे। कहीं पर नाना प्रकार के भक्ष्य थे, और कहीं पर अनेक प्रकार के पेय थे। अत्रिपुत्र ने शर्करासव शेष आठ आसवों से पृथक् कहा है। पुष्पासव और फलासव की आठ प्रकार की आसवयोनियों में गणना की गयी है। माध्वीक आसव भी फलासव का एक भेद है।

पानभूमि या मधुशाला का वर्णन अष्टांगसंग्रह में आता है। इसमें मद्य और मांस का सम्बन्ध बताया गया है–आनूप या जांगल मांस ठीक तरह से बना होने पर भी मद्य की सहायता के बिना ठीक तरह से नहीं पचता है। इसी से अत्रिपुत्र ने यक्ष्मा रोग चिकित्सा में कहा है। इस संग्रह का वर्णन गुप्त काल का है।

प्रसन्नां वारुणीं सीधुमरिष्टानासवान्मधु।
यथार्हमनुपानार्थं पिबेन्मांसानि भक्षयन्।।

Volume 8, Issue2, (April-June 2020)
Impact Factor: 5.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

ओषधि पर्वत

रामायण के युद्ध काण्ड में ओषधि पर्वतानयन अध्याय है, जिसमें हनुमान् ओषधि पर्वत को लंका में लाये थे। ओषधि पर्वत की पहचान बताते हुए हिमालय के पास कांञ्चन पर्वत अर्थात् स्वर्ण पर्वत और कैलास के शिखर का वर्णन किया गया है। इनके बीच में सभी ओषधियों से युक्त पर्वत हैं। ये ओषधियॉ मृतसंजीवनी, विशल्यकरणी, सावर्ण्यकरणी तथा सन्धानकरणी हैं। इन सबको लेकर हनुमान जल्दी ही आ गये थे। इन ओषधियों के आने से सभी मृत वानर शल्यरहित, पीड़ारहित हो गये। इन ओषधियों की गन्ध सूँघते ही सभी मृत वानर ऐसे उठे मानो नींद से उठे हों। मृत और जीवित की परीक्षा–शक्ति लगने पर लक्ष्मण जब मूर्च्छित हो गये तब राम ने उनको मृत समझा। उस समय सुषेण वैद्य ने उनके जीवित होने के निम्नलिखित चिह्न बताये। यथा–इसका मुख नहीं बदला, न काला पड़ा और न कान्ति रहित हुआ। वह अच्छी प्रभायुक्त है, प्रसन्न है, हथेलियाँ लाल कमल के समान हैं, आँखें निर्मल हैं, मृत व्यक्तियों का ऐसा रूप नहीं होता। मरणशील व्यक्ति के लक्षण इसके विपरीत होते हैं, यथा–

वैवर्ण्य भजते कायः कायच्छिद्रं विशुष्यति।
धूमः संजायते मूर्ध्नि दारूणाख्यश्च चूर्णकः।

लक्ष्मण को जीवित करने के लिए ओषधि पर्वत से दक्षिण किनारे की ओषधियों को लाने का निर्देश हनुमान को दिया गया था। हनुमान ओषधि को न पहचानकर पर्वत के एक भाग को ही ले आये। सुषेण वैद्य ने ओषधि को उखाड़कर वानरों को दिया। वानरों ने इसे कूटा, इसका नस्य सुषेण ने लक्ष्मण को दिया। इसे सूँघ कर लक्ष्मण पीड़ा रहित उठ खड़े हुए। रामायण में आयुर्वेद सम्बन्धी उद्धरण यत्र–तत्र थोड़े ही हैं। यह एक संस्कृत काव्यमय रचना है, कथाप्रसंग में जो भी उल्लेख मिलता है, उससे तत्कालीन चिकित्सा ज्ञान की स्थिति स्पष्ट हो जाती है। शल्य चिकित्सा, ओषध चिकित्सा उस समय पर्याप्त उन्नति पर थी, इसमें सन्देह नहीं।

वैद्यशब्द

वैद्य शब्द रामायण में सम्भवतः सबसे पहले आया है, वेद में भिषक् शब्द कहा गया है–

प्रधानं साधकं वैद्यं धर्मशीलं च राक्षस।
ज्ञातयो ह्यवमन्यन्ते शूरं परिभवन्ति च।

Volume 8, Issue2, (April-June 2020)
Impact Factor: 5.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

सन्दर्भ ग्रन्थ–सूची

आयुर्वेद का वृहद् इतिहास – श्रीअत्रिदेव लखनऊ 1960

आयुर्वेद का वैज्ञानिक इतिहास – आचार्य श्रीप्रियव्रत शर्मा चौखम्बा, वाराणसी, 1975.

आयुर्वेद के विकास – रामविलास,सोहगौरा, साहित्यवाणी, वैदिक साहित्य इलाहाबाद, 1990.

आयुर्वेद सार संग्रह – श्रीवैद्यनाथ आयुर्वेद भवन लिमिटेड, इलाहाबाद।

आरोग्य–अंक (कल्याण पत्रिका) – गीताप्रेस, गोरखपुर 333

वेद–कथांक (कल्याण पत्रिका) – गीताप्रेस, गोरखपुर

वेदों में आयुर्वेद – डॉ0कपिलदेव द्विवेदी, विश्वभारती अनुसंधान परिषद् वाराणसी–1993.

वैदिक देवशास्त्र – मैक्डॉनल अनु0 डॉ0सूर्यकान्त, पाणिनि पब्लिशर्स एण्ड प्रिंटर्स नई दिल्ली–1982.

वैदिक संस्कृति – गंगा प्रसाद उपाध्याय, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली, 1956.

वैदिक संहिताओं में आयुर्वेद – डॉ0प्रतिभा रानी, परिमल पब्लिकेशंस दिल्ली, 1989.

वैदिककोश – डॉ0सूर्यकान्त, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी, 1963.

वैदिक वांड्मय का इतिहास – पं0 भगवददत्त, भाग 1–3

केनोपनिषद् – गीताप्रेस, गोरखपुर

चिकित्सा के आदि स्रोत–वेद – प्रो0देवदत्त भट्ट छान्दोग्योपनिषद् – गीताप्रेस, गोरखपुर 1965.

बृहदारण्यकोपनिषद – गीताप्रेस, गोरखपुर सं0 1999.

भागवतपुराण – गीताप्रेस, गोरखपुर

श्रीमद्भागवद्गीता – गीताप्रेस, गोरखपुर सं0 2037.

द्विवेदी, विश्वनाथ – आयुर्वेद की ओषधियों व उनका वर्गीकरण, जामनगर–1970.

शास्त्री, रामगोपाल – वेदों में आयुर्वेद, दिल्ली–1956.

शास्त्री महेन्द्र कुमार – आयुर्वेद का संक्षिप्त इतिहास, बम्बई–1948.

दूबे डा0इतेन्द्र धर – ऋगवेद में वर्णित आयुर्वेदीय तत्वों का समीक्षात्मक का समीक्षात्मक अध्ययन